प्रकृति: कारण या प्रभाव?

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

प्रकृति : कारण या प्रभाव?

* तेईसवीं चमक

बेदिउज्जमां

TUGHRA BOOKS

न्यू जर्सी

कॉपीराइट © 2009 तुघरा बुक्स द्वारा

12 11 10 09 1 2 3 4

सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या किसी भी सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति प्रणाली द्वारा प्रकाशक से लिखित अनुमति के बिना पुन: प्रस्तुत या प्रेषित नहीं किया जा सकता है।

तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. यूनिट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.tughrabooks.com

हुसेन अकारसु द्वारा तुर्की से अनुवादित

आईएसबीएन: 978-1-59784-220-4

द्वारा मुद्रित
Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर iii

प्रकृति पर या प्रकृतिवादी नास्तिकता का खंडन 1

[द ग्लेम्स, द ट्वेंटी-थर्ड ग्लेम्स से]

एक अनुस्मारक 1

परिचय 2

पहला तरीका 3

पहली असम्भवता 3

दूसरी असम्भवता 5

तीसरी असम्भवता 6

दूसरा तरीका.. 7

पहली असम्भवता 7

दूसरी असम्भवता 8

तीसरी असम्भवता 9

तीसरा रास्ता 11

पहली असम्भवता 11

दूसरी असम्भवता 12

तीसरी असम्भवता 16

निष्कर्ष 27

पहला प्रश्न 28

दूसरा प्रश्न 31

तीसरा प्रश्न 35

सूची 39

हम

ईमानदारी और भाईचारा

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के कई आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र में, बेदीउज्जमां (1877-1960) मुस्लिम दुनिया में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरंतर प्रभाव के माध्यम से, आज भी हैं। उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो चौदहवीं शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, एक बुद्धिमान और संतुलित सक्रियता में बिताए, जो कि ठोस तर्क पर आधारित थी और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में थी।

बेदीउज़्ज़मान उस दौर में रहते थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज़्ज़मान ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई।

ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का प्रयोग युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, तथा शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक प्रभाव था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग इनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें क्रूरतम उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदिउज्जमां ने सम्पूर्ण लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, तथा उनके मन और आत्मा में आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक प्रशिक्षण के संस्थानों में जो कुछ भी सिखाया जाता था, उसे फूंक दिया।

बेदिउज़्ज़मान ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, न कि पहले की तरह अज्ञानता से। उन्होंने लिखा कि प्रकृति ईश्वरीय शक्तियों का संग्रह है।

संकेत और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित किया जाना चाहिए।

बेदीउज्जमां शब्द के सामान्य अर्थ में लेखक नहीं थे। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी, जो 5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह है, क्योंकि उनके पास एक मिशन था: उन्होंने विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित विचारों की भौतिकवादी और नास्तिक प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष किया और इस्लाम की सच्चाई को हर स्तर की समझ वाले आधुनिक दिमाग और दिलों के सामने पेश करने की कोशिश की। **कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी** रिसाले-ए-नूर मुख्य रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगंबर, मुख्य रूप से कुरान सहित ईश्वरीय शास्त्रों, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्रों, ईश्वरीय नियति और मानवता की स्वतंत्र इच्छा, पूजा, मानव जीवन में न्याय और सृष्टि के बीच मानवता के स्थान और कर्तव्य पर केंद्रित है।

लोगों के मन और दिल से झूठे विश्वासों और अवधारणाओं के जमा हुए 'अवसाद' को हटाने और उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बे-दीउज्जमान जोरदार तरीके से लिखते हैं और दोहराते हैं। वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं; बल्कि वह भावनाओं से अपील करते हैं और लोगों के दिल और दिमाग में अपने विचारों और विचारों को उंडेलने का लक्ष्य रखते हैं ताकि उन्हें विश्वास और दृढ़ विश्वास के लिए जागृत किया जा सके।

इस पुस्तक में रिसाले-ए-नूर संग्रह से चयनित अनुभाग शामिल हैं ।

प्रकृति पर या प्रकृतिवादी नास्तिकता का खंडन

[द ग्लेम्स, द ट्वेंटी-थर्ड ग्लेम्स से]

एक अनुस्मारक

प्रकृतिवादियों का अविश्वास करने का तरीका बहुत ही अतार्किक और अंधविश्वासी मान्यताओं पर आधारित है। लेकिन इतने प्रसिद्ध, बुद्धिमान प्रकृतिवादी दार्शनिक इस तरह के स्पष्ट रूप से अंधविश्वासी विचार को क्यों स्वीकार कर पाते हैं? तथ्य यह है कि वे अपने तरीके की वास्तविकता को नहीं समझ पाते हैं, जो ऐसे अंधविश्वासी विश्वासों को जन्म देता है, हालाँकि उन तक पहुँचना या उन्हें स्वीकार करना असंभव है। वे कुरान और विश्वास की सच्चाइयों और सार तत्वों पर हिंसक हमला करते हैं, जो कुछ भी वे नहीं समझ पाते हैं उसे अंधविश्वासी बताकर उसकी निंदा करते हैं और अपने अविश्वास को प्रकृति पर आधारित करते हैं। कुरान की आयत, उनके दूतों ने कहा: "क्या आकाश और पृथ्वी के निर्माता ईश्वर के बारे में कोई संदेह हो सकता है?" (14: 10), जो ईश्वर के अस्तित्व और एकता की घोषणा करता है, वास्तव में चर्चा की आवश्यकता के लिए बहुत स्पष्ट है। इसलिए, मैं यह दिखाने की कोशिश करूँगा कि ऐसा क्यों है और प्रकृतिवादी दार्शनिकों द्वारा उनके द्वारा निकाले गए परिणामों का तर्कसंगत रूप से अनुमान लगाना असंभव क्यों है।

विधियाँ। हालाँकि, चूँकि ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व के अनेक प्रमाणों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया गया है

रिसाले-ए-नूर के कुछ भागों पर विस्तृत जानकारी देने के बाद , मैं यहां कुछ अन्य प्रमाण प्रस्तुत करूंगा तथा जहां आवश्यक होगा, वहां कुछ भिन्न प्रमाणों का संक्षिप्त उल्लेख करूंगा।

परिचय

हे मानव! कुछ ऐसे भयानक वाक्य हैं जो लोगों द्वारा कहे जाते हैं जो अविश्वास को दर्शाते हैं। कुछ विश्वासी भी इनका इस्तेमाल करते हैं, बिना यह जाने कि इनका असल में क्या मतलब है। मैं इनमें से तीन सबसे महत्वपूर्ण वाक्यों के बारे में बताऊँगा।

पहला : “कारणों ने इसे जन्म दिया है।”

दूसरा : “चीजें अपने आप बनी हैं।”

तीसरा : "यह स्वाभाविक है; प्रकृति इसे आवश्यक बनाती है और इसका निर्माण करती है।"

वास्तव में, चूँकि चीज़ें निर्विवाद रूप से मौजूद हैं, और, जैसा कि स्पष्ट रूप से देखा गया है, प्रत्येक चीज़ महान कलात्मकता और कई बुद्धिमान उद्देश्यों के साथ अस्तित्व में आती है, और चूँकि कुछ भी शाश्वत या बिना शुरुआत के नहीं है, और हर चीज़ समय के भीतर अस्तित्व में आती है, तो, हे अविश्वासी, या तो चीज़ें, उदाहरण के लिए, वह जानवर, बेजान, अचेतन, बहरे और अंधे भौतिक कारणों द्वारा आविष्कार किया गया है जो सार्वभौमिक ज्ञान, चेतना और इच्छा की आवश्यकता वाले तरीके से एक साथ आते हैं, या वे खुद से बनते हैं, या प्रकृति, या जिसे आप प्राकृतिक शक्तियाँ कहते हैं, उसके कारण यह अस्तित्व में आया है। एक चौथा विकल्प है

परम ज्ञान और इच्छा के साथ मिलकर, एक सर्वशक्तिमान महामहिम की शक्ति ने इसका आविष्कार किया है। चूँकि इन चार के अलावा अन्य चीजों के अस्तित्व को समझाने का कोई और तरीका नहीं है, अगर पहले तीन को निर्णायक रूप से असंभव साबित किया जा सकता है, तो चौथा तरीका, जो कि ईश्वरीय एकता का तरीका है, अनिवार्य रूप से और निस्संदेह सत्य साबित होगा।

पहला तरीका

यह सिद्धांत है कि भौतिक कारणों के एक साथ आने से चीजें अस्तित्व में आती हैं। ऐसे कई तर्कों में से जो इस तरह के रुख की असत्यता और असंभवता को दर्शाते हैं, मैं केवल तीन का उल्लेख करूंगा।

पहली असंभवता

मान लीजिए कि किसी फार्मेसी में सैकड़ों जार हैं, जो अलग-अलग पदार्थों से भरे हैं। हम उनसे किसी तरह की तरल दवा या मलहम बनाना चाहते हैं। इसलिए हम फार्मेसी जाते हैं और पता लगाते हैं कि आवश्यक सामग्री क्या है और हमें प्रत्येक की कितनी मात्रा का उपयोग करना चाहिए। हम देखते हैं कि प्रत्येक घटक से एक अत्यंत सटीक मात्रा ली जानी चाहिए। यदि थोड़ी सी भी मात्रा कम या ज्यादा ली जाए, तो दवा और मलहम दोनों अपने विशेष गुणों को खो देंगे और किसी काम के नहीं रहेंगे।

क्या यह संभव या कल्पना योग्य है कि उन जार को तूफान से गिरा दिया जाए और प्रत्येक घटक से बिल्कुल आवश्यक मात्रा निकल आए?

क्या इस तरह के संयोग से बनने वाली दवा और मरहम को एक साथ देखना अंधविश्वास या बेतुकापन हो सकता है?

इस उदाहरण में हमें प्रत्येक वस्तु, विशेष रूप से प्रत्येक जीवित वस्तु को एक सजीव मरहम और प्रत्येक पौधे को एक जीवित औषधि के रूप में सोचना चाहिए। वे बहुत सी चीज़ों से अत्यंत सटीक मात्रा में लिए गए असंख्य पदार्थों से बने हैं। भौतिक कारणों के संयोगवश एक साथ आने के कारण उनका होना, किसी भी मरहम या औषधि के निर्माण की तुलना में कहीं अधिक असंभव और अकल्पनीय है, जो कि पूर्व-आवश्यक मात्रा में पदार्थों के संयोगवश एक साथ आने के परिणामस्वरूप होता है, जैसा कि उदाहरण में दिखाया गया है।

संक्षेप में, केवल सर्वव्यापक, असीम बुद्धि, अनंत ज्ञान और सर्वव्यापी इच्छाशक्ति द्वारा ही इस ब्रह्माण्ड के विशाल भण्डार में किसी भी जीवित वस्तु का निर्माण पदार्थों से अत्यंत सटीक मात्रा में लिए गए अवयवों से किया जा सकता है, जिन्हें दिव्य इच्छा के तराजू पर मापा जाता है।

छोटे या निर्धारण और निर्णय। जो व्यक्ति यह दावा करता है कि वे अंधे, बहरे और अज्ञानी "प्राकृतिक कारणों और शक्तियों" या बाढ़ जैसे तत्वों का काम हैं, वह उस व्यक्ति से अधिक मूर्ख है जो यह दावा करता है कि उदाहरण में दवा जार के पलट जाने के परिणामस्वरूप स्वयं निर्मित हुई है।

दूसरी असंभवता

अगर हर चीज़ को “प्राकृतिक कारणों” के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, न कि सर्वशक्तिमान, एक और अद्वितीय के लिए, तो इसका मतलब है कि हर जीवित चीज़ या प्राणी के शरीर में कई भौतिक तत्व और कारण मौजूद होने चाहिए और काम करने चाहिए। हालाँकि, इतने सारे अलग-अलग और परस्पर विरोधी कारण और तत्व अपने आप ही एकदम सही क्रम में और बेहद सटीक माप के साथ एक साथ आते हैं, यहाँ तक कि सबसे छोटे जीव, जैसे कि एक छोटी सी मक्खी के शरीर में भी, इतना स्पष्ट रूप से अकल्पनीय है कि थोड़ी सी भी चेतना वाला व्यक्ति भी कह सकता है, “यह अकल्पनीय है; ऐसा नहीं हो सकता।”

दरअसल, मक्खी के छोटे से शरीर का ब्रह्मांड के अधिकांश तत्वों और कारणों से संबंध और जुड़ाव है; वास्तव में, यह उनका सारांश या सूचकांक है। अगर इसे शाश्वत, शक्तिशाली व्यक्ति से संबंधित नहीं माना जाता है, तो उन तत्वों और भौतिक कारणों को इसमें मौजूद होना चाहिए और अपने आप काम करना चाहिए। यहां तक कि यह भी आवश्यक है कि वे इसकी आंखों की प्रत्येक कोशिका में मौजूद हों और काम करें, जो इसके शरीर के छोटे नमूने हैं।

क्योंकि अगर किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए ज़िम्मेदार कारण या कारक भौतिक प्रकृति के हैं, तो उन्हें उसके परिणाम के तत्काल आसपास, बल्कि उसके अंदर मौजूद होना चाहिए। इसलिए, किसी मक्खी को "प्राकृतिक" कारणों और तत्वों के लिए जिम्मेदार ठहराने के लिए यह ज़रूरी है कि वे कारण और तत्व उसकी हर कोशिका में मौजूद हों और काम करें। यहां तक कि कुतर्क करने वाले सबसे मूर्ख लोग भी ऐसी धारणा पर शर्मिंदा होंगे।

तीसरी असंभवता

यह एक स्थापित नियम है कि "किसी विशेष व्यक्तित्व वाली एक भी, अनोखी चीज़ केवल एक ही, अनोखे स्रोत से ही उत्पन्न हो सकती है।" यदि, विशेष रूप से, कोई चीज़ एक जीवित चीज़ है जिसका जीवन पूरी तरह से व्यवस्थित और सबसे संवेदनशील रूप से संतुलित है, तो यह स्वतः ही प्रदर्शित करेगा कि यह कई, अलग-अलग हाथों से उत्पन्न नहीं हुई है, जो निश्चित रूप से बहुत भ्रम और संघर्ष का कारण बनेगी, बल्कि यह एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ व्यक्ति के हाथ से उत्पन्न हुई है। इसके अलावा, किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए असंख्य निर्जीव, अज्ञानी, अप्रतिबंधित, अचेतन, अंधे और बहरे "प्राकृतिक" कारणों और तत्वों का यादृच्छिक रूप से एक साथ आना केवल असीमित संभावनाओं के बीच उनके अंधेपन और बहरेपन को बढ़ाएगा। इसलिए, किसी भी प्राणी को, जिसमें एक अद्वितीय, विशेष व्यक्तित्व है जो पूर्ण क्रम में और सबसे संवेदनशील रूप से संतुलित तरीके से असंख्य तत्वों से बना है, ऐसे कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराना उतना ही अनुचित होगा जितना कि एक साथ असंख्य असंभवताओं को स्वीकार करना।

इन असंभवताओं को अनदेखा करते हुए, भौतिक कारण या एजेंट या शक्तियाँ सीधे संपर्क के माध्यम से किसी चीज़ को प्रभावित करती हैं। हालाँकि, उनका संपर्क केवल चीज़ों या प्राणियों के बाहरी हिस्सों से होता है। लेकिन हम देखते हैं कि विशेष रूप से जीवित प्राणियों के अंदरूनी हिस्से, जहाँ भौतिक या "प्राकृतिक" कारणों या एजेंटों के हाथों का कोई संपर्क नहीं होता है, वे दस गुना बेहतर व्यवस्थित, अधिक नाजुक और कलात्मक होते हैं।

उनके बाहरी रूप। सबसे छोटे जीवित प्राणी, सबसे छोटे जीव, जिन तक भौतिक या "प्राकृतिक" कारणों और एजेंटों के हाथ नहीं पहुँच सकते हैं और जिनके साथ उनका सीधा संपर्क नहीं है, यहाँ तक कि उनके बाहरी रूप से भी नहीं, कला में सबसे बड़े जीवों की तुलना में अधिक विचित्र और अद्भुत हैं और सृजन में अधिक विस्मयकारी हैं। ऐसा होने पर, केवल वही व्यक्ति जो निर्जीव, अज्ञानी, अपरिष्कृत, दूर और परस्पर विरोधी कारणों और तत्वों की तुलना में सौ गुना अधिक बहरा और अंधा है, इन प्राणियों को उन कारणों और तत्वों के लिए जिम्मेदार ठहरा सकता है।

दूसरा तरीका

यह दावा है कि चीज़ें अपने आप बनती हैं। यह कई मायनों में उतना ही अकल्पनीय और असंभव है। उदाहरण के तौर पर, हम उनमें से तीन को समझाएँगे।

पहली असंभवता

हे सृष्टिकर्ता को नकारने वाले! तुम किसी असंभव चीज़ को कई तरीकों से संभव मान सकते हो। क्योंकि तुम अस्तित्व में हो और कोई साधारण, निर्जीव या अपरिवर्तनीय पदार्थ नहीं हो। बल्कि, तुम एक पूरी तरह से सुव्यवस्थित और निरंतर नवीनीकृत कारखाने या एक अद्भुत महल की तरह हो जो निरंतर परिवर्तन और नवीनीकरण से गुजरता है।

आपके शरीर में असंख्य कण निरंतर कार्य कर रहे हैं, जिनका ब्रह्माण्ड के साथ संबंध और पारस्परिक सम्बन्ध है, विशेषकर ऊर्जा के प्रावधान के सम्बन्ध में।

और आपकी प्रजाति की स्थायित्व। आपके शरीर में कण उन संबंधों और संबंधों को नष्ट न करने के लिए सावधान रहते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे पूरे ब्रह्मांड को आपके संबंधों के परिप्रेक्ष्य से देखते हैं और उसी के अनुसार अपनी स्थिति ग्रहण करते हैं। इसलिए, यदि आप यह स्वीकार नहीं करते हैं कि आपके शरीर में कण शाश्वत, सर्वशक्तिमान के कानून के अनुसार चलने वाले छोटे अधिकारी या उसके किसी सेना के सैनिक या दिव्य नियति की कलम की नोक या दिव्य शक्ति की कलम की नोक नहीं हैं, तो आपकी आंख में काम करने वाले प्रत्येक कण में आपके पूरे शरीर को पूरे ब्रह्मांड के साथ देखने में सक्षम आंख होनी चाहिए, जिसके साथ आपका शरीर जुड़ा हुआ है और संबंधित है। आपको प्रत्येक कण को सौ प्रतिभाओं के बराबर बुद्धि भी देनी होगी; इसमें आपके पूरे अतीत और भविष्य, आपके पूर्वजों और वंशजों, आपके शरीर को बनाने वाले तत्वों की उत्पत्ति और आपके पोषण के स्रोतों को जानने की क्षमता होनी चाहिए। एक हजार प्लेटो की चेतना और ज्ञान का श्रेय एक अज्ञानी कण को देना स्पष्ट रूप से गुमराह करने वाला है।

दूसरी असंभवता

तुम्हारा शरीर भी एक अद्भुत महल जैसा है जिसमें हज़ारों गुंबद हैं और पत्थर एक दूसरे को सहारा दे रहे हैं। बल्कि, तुम्हारा शरीर किसी भी महल से हज़ार गुना ज़्यादा अद्भुत है। इसीलिए

आपके शरीर का महल निरंतर पूर्ण क्रम में नवीनीकृत होता रहता है। भले ही हम आपकी आत्मा, आपके हृदय और अन्य अमूर्त क्षमताओं को अनदेखा कर दें, जिनमें से प्रत्येक अत्यंत अद्भुत है, आपके शरीर का प्रत्येक सदस्य एक गुंबददार महल की तरह है। पूर्ण क्रम और संतुलन में एक दूसरे का समर्थन करते हुए, आपके परमाणु कला और शक्ति के चमत्कार बनाते हैं, जैसे कि आंखें और जीभ। यदि वे परमाणु उस ब्रह्मांड के निर्माता के आदेशों का पूर्ण आज्ञाकारिता में काम करने वाले अधिकारी नहीं होते, तो उनमें से प्रत्येक को शरीर के अन्य सभी परमाणुओं पर हावी होना पड़ता और उन पर हावी होना पड़ता, और कई विशेषताओं का मूल होना पड़ता जो विशेष रूप से अनिवार्य रूप से अस्तित्वमान एक से संबंधित हैं, फिर भी एक ही समय में पूरी तरह से स्वतंत्र और आश्रित दोनों होना पड़ता। इसलिए, किसी भी अस्तित्ववान प्राणी को, जिसमें एकता और विशिष्टता के एकल एक का कार्य होने के कारण एक अद्वितीय व्यक्तित्व है, उसे बनाने वाले असंख्य परमाणुओं को जिम्मेदार ठहराना, एक स्पष्ट, सौ गुना असंभव है।

तीसरी असंभवता

यदि आपका शरीर ईश्वर की कलम से "लिखा" न गया होता

शाश्वत सर्वशक्तिमान, जो एक और अद्वितीय है, और बल्कि प्रकृति या "प्राकृतिक" कारणों का एक कार्य था, तो प्रकृति के उतने ही मुद्रण-खंड या सांचे होने चाहिए जितनी उसकी कोशिकाओं और

आपके शरीर में बनने वाले यौगिक एक दूसरे के भीतर समाहित होते हैं। उदाहरण के लिए, आपके हाथ में यह पुस्तक या तो किसी एक लेखक द्वारा लिखी गई है, जो उसके

ज्ञान, या यदि आप दावा करते हैं कि यह स्वयं या प्रकृति द्वारा निर्मित है, तो इसमें उतनी ही कुंजियाँ होनी चाहिए जितनी इसके अक्षरों की संख्या है। एक प्रिंटिंग प्रेस में वर्णमाला के अक्षरों की संख्या के बराबर ही लौह अक्षर होते हैं। एक शब्द लिखने के लिए उन्हें एक-एक करके व्यवस्थित करना पड़ता है, और इसलिए यह कहा जा सकता है कि एक पुस्तक के अक्षरों के बराबर ही लौह अक्षरों की आवश्यकता होती है ताकि एक पुस्तक स्वयं बन सके।

इसके अलावा, एक तरह की सुलेख कला भी है जिसमें सिर्फ़ एक बड़ा अक्षर होता है, फिर भी, उदाहरण के लिए, पाँच या छह पन्नों का पूरा कुरानिक सूरा लिखा जा सकता है। इसका मतलब है कि प्रिंटिंग प्रेस में एक अक्षर लिखने के लिए हमें हज़ारों लोहे के अक्षरों की ज़रूरत होती है।

इसी तरह, प्रत्येक जीवित वस्तु या प्राणी ऐसे ही एक अक्षर की तरह है। इसमें ब्रह्मांड में मौजूद लगभग सभी चीजें समाहित हैं। इसलिए, जिस तरह किसी पुस्तक को स्वयं या उसके लौह अक्षरों के लिए जिम्मेदार ठहराने के लिए उन अक्षरों को एक प्रिंटिंग प्रेस में सचेत, सार्थक तरीके से खुद से एक साथ आना पड़ता है, अगर हम किसी जीवित वस्तु या प्राणी को स्वयं के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि ब्रह्मांड के सभी परमाणु या असंख्य नमूने सचेत रूप से इसे बनाने के लिए एक साथ आए हैं। भले ही हम इस हास्यास्पद विचार को स्वीकार कर लें, जिसमें जीवित प्राणी के कणों, यहां तक कि ब्रह्मांड के कणों जितनी ही असंभवताएं शामिल हैं, यह जीवन और इसकी उत्पत्ति, या एक सचेत जीवित प्राणी की कई अमूर्त क्षमताओं, जैसे कि कारण, चेतना और इच्छाशक्ति को समझाने से असीम रूप से दूर है।

तीसरा रास्ता

यह दावा है कि "यह स्वाभाविक है; प्रकृति ने इसे आवश्यक बनाया है और इसे बनाया है।" इस दावे में कई असंभवताएँ भी शामिल हैं, जिनमें से केवल तीन निम्नलिखित हैं:

पहली असंभवता

यदि जीवित प्राणियों में देखी जाने वाली कला और रचनात्मकता, जो अनंत ज्ञान, बुद्धि और इच्छाशक्ति प्रदर्शित करती है, को निर्धारण की कलम और अनन्त सूर्य की शक्ति के लिए नहीं बल्कि अंधे, बहरे और अचेतन प्रकृति और "प्राकृतिक शक्तियों" के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो इसका मतलब है कि हम स्वीकार करते हैं कि या तो प्रकृति को हर प्राणी में इसका आविष्कार करने के लिए असंख्य मशीनें या प्रिंटिंग प्रेस मौजूद होने चाहिए या प्रकृति को हर प्राणी में ब्रह्मांड बनाने और उसे संचालित करने के लिए पर्याप्त ज्ञान, इच्छाशक्ति, शक्ति और बुद्धि शामिल करनी चाहिए।

मान लीजिए कि हम हर जगह सूर्य का प्रतिबिंब देखते हैं।

हर पारदर्शी चीज, कांच के हर टुकड़े या पानी के बुलबुले में। अगर हम हर पारदर्शी चीज में दिखने वाले सूरज को आसमान में मौजूद एक और अकेले सूरज के लिए जिम्मेदार नहीं मानते हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि सभी चीजों में, यहां तक कि उन चीजों में भी जो इतनी छोटी हैं कि उनमें माचिस की तीली भी नहीं समा सकती, एक छोटा सूरज है जो आसमान में मौजूद सूरज के सभी गुणों को समेटे हुए है। इसके अलावा, हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि जितने सूरज कांच के हर टुकड़े या समुद्र, नदी या झील आदि में मौजूद हर बुलबुले में दिखते हैं, उतने ही सूरज हैं।

ठीक उसी तरह, अगर सभी विद्यमान चीजें, चाहे वे सजीव हों या निर्जीव, शाश्वत सूर्य के नामों की अभिव्यक्तियों के लिए जिम्मेदार नहीं हैं, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि हर चीज, खास तौर पर हर जीवित चीज या प्राणी, अपने आप में एक प्रकृति या शक्ति या, सीधे शब्दों में कहें तो, एक देवता है, जिसके पास अनंत ज्ञान, इच्छा, शक्ति और बुद्धि है। ऐसा विचार ब्रह्मांड में असंभवताओं में सबसे झूठा और अंधविश्वासी है। जो व्यक्ति ब्रह्मांड के निर्माता की कला को अचेतन प्रकृति या कुछ नाममात्र शक्तियों के लिए जिम्मेदार ठहराता है, वह किसी भी अन्य प्राणी की तुलना में चेतना से अधिक वंचित है।

दूसरी असंभवता

यदि उन सभी सुव्यवस्थित, और सबसे कलात्मक और बुद्धिमानी से गढ़ी गई चीजों और प्राणियों को एक असीम रूप से शक्तिशाली और बुद्धिमान व्यक्ति के लिए नहीं, बल्कि प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो इसका मतलब यह होगा कि प्रकृति को मिट्टी के हर टुकड़े में उतने ही कारखाने और प्रिंटिंग प्रेस होने चाहिए जितने यूरोप में हैं ताकि मिट्टी का हर टुकड़ा वहां उगने वाले फूलों और फलदार पेड़ों के निर्माण और विकास का साधन बन सके। क्योंकि मिट्टी का एक बर्तन कई अलग-अलग फूलों को आकार और रूप देने की वास्तविक क्षमता प्रदर्शित करता है जिनके बीज उसमें दबे होते हैं। इसलिए, यदि उन फूलों को सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है

महाराज, तब तो मिट्टी में प्रत्येक फूल के लिए एक अलग मशीन होनी चाहिए।

शुक्राणुओं और अंडों की तरह, सभी बीज एक ही तत्वों से बने होते हैं। प्रत्येक ऑक्सीजन, हाइड्रोजन और हाइड्रोजन से बना होता है।

ड्रोजन, कार्बन और नाइट्रोजन से बना है, और हवा, पानी, गर्मी और प्रकाश जैसी अचेतन चीजों के प्रभावों के संपर्क में है। लेकिन हम देखते हैं कि प्रत्येक फूल का एक विशेष आकार, गंध और रंग होता है, और वह दूसरों से पूरी तरह अलग होता है। इसलिए, इसके लिए आवश्यक है कि उस मिट्टी में उतनी ही फैक्ट्रियाँ हों जितनी यूरोप में हैं ताकि वे सभी अलग-अलग जीवित कपड़े, हज़ारों तरह के कढ़ाई वाले कपड़े बुने जा सकें।

इस प्रकार, आप देख सकते हैं कि प्रकृतिवादियों और भौतिकवादियों के दावे कितने अनुचित हैं, तथा प्रकृति या कारणों या स्वयं वस्तुओं को रचनात्मकता का श्रेय देना कितना अवैज्ञानिक और अंधविश्वासपूर्ण है।

यदि आप पूछें: प्रकृति को अस्तित्व का श्रेय देने से उत्पन्न होने वाली कठिनाइयाँ कैसे गायब हो जाती हैं जब अस्तित्व को अद्वितीय, सभी के लिए शाश्वत रूप से वांछित माना जाता है? अस्तित्व, जो प्रकृति को दिए जाने पर अकल्पनीय है, वह ईश्वर, एक और अद्वितीय को दिए जाने पर कैसे आसान और आवश्यक हो जाता है?

उत्तर: हमने देखा है कि पृथ्वी पर मौजूद हर पारदर्शी चीज़ में एक सूर्य के अस्तित्व की व्याख्या करते समय, जिसमें महासागरों में पानी की हर बूंद या बुलबुला भी शामिल है, यह अकल्पनीय और असंभव है कि जितने सूर्य दिखाई देते हैं, उतने हो सकते हैं। लेकिन अगर हम उन (प्रतिबिंबित) सूर्यों को आकाश में मौजूद एक सूर्य के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं, तो उनके अस्तित्व की व्याख्या करना बेहद आसान है। (यह भी कहा जा सकता है कि सूर्य का अस्तित्व दुनिया को एक सूर्य बनाता है।

असंख्य परावर्तित सूर्यों का अस्तित्व आवश्यक है और

अपरिहार्य।) इसी तरह, सभी अस्तित्वमान चीजों को एक अद्वितीय, हमेशा से सभी के लिए चाहने योग्य मानने से उनका अस्तित्व इतना आसान हो जाता है कि हम यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाते कि उनका अस्तित्व आवश्यक और अपरिहार्य है। उनके और उस अद्वितीय के बीच एक संबंध उनके अस्तित्व के लिए पर्याप्त है। लेकिन अगर यह संबंध टूट जाता है, और हर चीज को प्रकृति या खुद पर छोड़ दिया जाता है, तो हमें यह स्वीकार करना होगा कि एक मक्खी जैसे छोटे जीव को बनाने के लिए, जो ब्रह्मांड का एक छोटा सा नमूना है, अंधी और बहरी प्रकृति के पास पूरे ब्रह्मांड को बनाने और उस पर शासन करने के लिए पर्याप्त ज्ञान, शक्ति और बुद्धि होनी चाहिए। यह हजार गुना असंभव है।

संक्षेप में, जिस प्रकार यह अकल्पनीय और असंभव है कि अनिवार्यतः अस्तित्वमान परमेश्वर के दिव्य सार में कोई साझेदार या उसके जैसा कोई हो, उसी प्रकार उसकी रचना और उसकी रचना पर प्रभुत्व में अन्यों की भागीदारी या हस्तक्षेप भी अकल्पनीय और असंभव है।

जहाँ तक सवाल के दूसरे हिस्से की बात है, जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कई अन्य हिस्सों में कहा गया है, जब अस्तित्व को अद्वितीयता के एक ही व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो सभी चीजों का अस्तित्व उतना ही आसान हो जाता है जितना कि एक चीज का। लेकिन अगर इसे "प्राकृतिक" कारणों या प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो प्रत्येक चीज का अस्तित्व उतना ही मुश्किल हो जाता है जितना कि सभी चीजों का।

जब कोई व्यक्ति सेना में शामिल होता है या अधिकारी के रूप में राज्य से जुड़ा होता है, तो वह व्यक्ति अपने व्यक्तिगत कर्तव्यों से परे कर्तव्यों की पूर्ति का साधन बन सकता है।

हमारी शक्ति और प्रभाव को लाख गुना बढ़ा देता है।

वे राज्य के नाम पर राजा को भी बंदी बना सकते हैं। फिर भी यह व्यक्ति उन सभी कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक उपकरण और शक्ति नहीं रखता है, न ही उसे ऐसा करने के लिए बाध्य किया जाता है, जिसमें वह भाग लेता है। उनके संबंध के कारण, सेना, जो उनका सहारा है, ऐसी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इसलिए, इस एक व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कोई भी कर्तव्य सेना या राज्य के कर्तव्यों जितने ही महान हो सकते हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे ईश्वर के एक अधिकारी के रूप में एक चींटी फिरौन के महल को नष्ट करने में सक्षम है, या एक मक्खी निम्रोद को मार सकती है, या एक चीड़ का बीज, जो गेहूँ के दाने के आकार का होता है, एक विशाल चीड़ के पेड़ के सभी भागों को उत्पन्न कर सकता है।1

यदि व्यक्ति का सेना के साथ संबंध तोड़ दिया जाता है, तो उसे अपने आप पर छोड़ दिया जाता है, तो या तो उसकी शक्ति स्वयं तक ही सीमित हो जाएगी, या उसे सेना से संबंधित सभी उपकरण ले जाने होंगे और यदि उसे सेना के सदस्य के रूप में वही कर्तव्य निभाने की आवश्यकता होती है, तो उसे सेना की शक्ति प्राप्त करनी होगी। यहां तक कि लोगों को हंसाने के लिए कहानियां और कल्पनाएं गढ़ने वाले विदूषक भी दूसरा मामला बताने में शर्मिंदा होंगे।

---

1 सृष्टिकर्ता के साथ अपने संबंध के कारण, वह बीज ईश्वरीय नियति या निर्धारण के आदेश के तहत काम करता है और कई असाधारण कर्तव्यों की पूर्ति का साधन है। यदि वह संबंध टूट जाता है, तो बीज के निर्माण के लिए एक विशाल चीड़ के पेड़ को बनाने की तुलना में अधिक क्षमता, उपकरण और कौशल की आवश्यकता होती है। चीड़ के पेड़ के सभी भाग, जो ईश्वरीय शक्ति का कार्य है, संभावित पेड़ में मौजूद होंगे - बीज, जो ईश्वरीय नियति का कार्य है।

पेड़ को पैदा करने वाली फैक्ट्री बीज है। नियति द्वारा बीज में समाहित पेड़ उस शक्ति से एक पेड़ के रूप में विकसित होता है।

संक्षेप में कहें तो, जब सभी चीजों का अस्तित्व अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उसे आवश्यक और अपरिहार्य माना जाता है। लेकिन जब सभी चीजों का अस्तित्व प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो वह अतार्किक, असंभव और अकल्पनीय हो जाता है।

तीसरी असंभवता

निम्नलिखित दो तुलनाएँ, जिनका उल्लेख रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में किया गया है, इस असंभवता की व्याख्या करती हैं:

पहली तुलना: एक जंगली, अशिक्षित आदमी एक महल में प्रवेश करता है जो एक विशाल रेगिस्तान में बनाया गया है और सभ्यता के सभी फलों से सजाया गया है।

महल में कोई नहीं होने के कारण, वह हजारों अद्भुत, कलात्मक रूप से निर्मित वस्तुओं की जांच करता है और अपनी अज्ञानता और पर्याप्त बुद्धि की कमी के कारण सोचता है कि महल में मौजूद वस्तुओं में से किसी एक ने महल को बनाया होगा, जो कुछ भी इसमें है। लेकिन वह जिस भी वस्तु की जांच करता है, वह अपनी कच्ची और अशिक्षित बुद्धि को भी यह विश्वास नहीं दिला पाता कि वह वस्तु महल में मौजूद है।

वस्तु ने महल का निर्माण किया है।

बाद में उसे एक नोटबुक मिलती है जिसमें महल की विस्तृत योजना, उसकी सामग्री की सूची और उसके प्रबंधन के नियम लिखे होते हैं। यह भी असंभव है कि जिस नोटबुक में हाथ, आंखें या औजार नहीं हैं, उसने महल का निर्माण और सजावट की हो। हालाँकि, उसे कुछ भी दिखाई नहीं देता है जिससे वह समझ सके कि महल में क्या हो रहा है।

महल के अस्तित्व को बताते हुए, और चूंकि अन्य वस्तुओं की तुलना में नोटबुक, जिसमें महल के निर्माण, सजावट और प्रबंधन के नियम हैं, उसके अस्तित्व को समझाने में अधिक सक्षम प्रतीत होती है, इसलिए वह व्यक्ति यह कहने के लिए बाध्य महसूस करता है, "यही नोटबुक है जिसने महल को डिजाइन किया और बनाया, और इसे उन सभी वस्तुओं से सजाया, जिन्हें इसने बनाया और इस महल में रखा था।" क्या यह सरासर मूर्खता और बकवास नहीं है?

जैसा कि इस तुलना में, ईश्वर को नकारने वाला प्रकृतिवादी ब्रह्मांड के इस महल में प्रवेश करता है, जो कि ऊपर वर्णित तुलना में महल की तुलना में असीम रूप से अधिक सुव्यवस्थित और अधिक परिपूर्ण है, और जो पूरे ब्रह्मांड में ज्ञान के चमत्कारों से सुशोभित है। यह न सोचते हुए कि यह अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी की कला का कार्य है, जो आकस्मिकता के क्षेत्र से परे है, और उस विचार से बचते हुए, वह उस पर ध्यान केंद्रित करता है जिसे वे गलत तरीके से "प्रकृति" कहते हैं। प्रकृति, वास्तव में, आकस्मिकता के क्षेत्र में दिव्य नियति या निर्धारण का एक बोर्ड है। दिव्य नियति या निर्धारण इसका उपयोग अपने निर्णयों को लिखने और मिटाने के लिए करता है। दूसरे दृष्टिकोण से, प्रकृति दिव्य शक्ति के नियमित कार्यों के शीर्षकों या नियमों की एक निरंतर बदलती नोटबुक है, और दुनिया के भगवान के रूप में उनकी कला के कार्यों की एक सूची है। हालाँकि, ब्रह्मांड के महल में प्रवेश करने वाला प्रकृतिवादी कहता है, "इन सभी चीजों को अपने अस्तित्व के लिए एक कारण की आवश्यकता होती है। ऐसा कुछ भी दिखाई नहीं देता है जो इससे अधिक हो

इस 'नोटबुक' को इसका श्रेय देने के लिए कोई और उपयुक्त नहीं है। भले ही इस अंधे, अचेतन, अज्ञानी और शक्तिहीन 'नोटबुक' को ब्रह्मांड के महल के निर्माता के रूप में स्वीकार करना पूरी तरह से अनुचित है, जिसके अस्तित्व के लिए स्पष्ट रूप से अनंत ज्ञान और शक्ति की आवश्यकता है, क्योंकि मैं शाश्वत निर्माता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता, इसलिए मुझे यह कहना बेहतर होगा कि इस 'नोटबुक' ने इस महल को बनाया है।"
जिस पर हम उत्तर देते हैं:

> हे मूर्ख! प्रकृतिवाद के दलदल से अपना सिर बाहर निकालो और घूमो! तुम उस महान निर्माता को देखोगे, जिसकी गवाही परमाणुओं से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी चीजें देती हैं, प्रत्येक अपनी-अपनी जुबान से, और जिसकी ओर वे अपनी-अपनी उंगली से इशारा करते हैं। उस शाश्वत निर्माता के प्रकटीकरण को देखो, जिसने उस महल को बनाया है और उसका कार्यक्रम उस "नोटबुक" में लिखा है! उसकी पुस्तक - कुरान - पर कान लगाओ और अपने निरर्थक शब्दों से बचो!

दूसरी तुलना: एक बेहद असभ्य, अशिक्षित व्यक्ति एक शानदार बैरक में प्रवेश करता है। वह एक शानदार ढंग से व्यवस्थित सेना के अनुशासित कार्यों को देखता है जो अपनी ड्रिल कर रही है। एक रेजिमेंट, एक बटालियन और एक सेना कोर बैठते हैं, खड़े होते हैं, मार्च करते हैं, और हथियार उठाते और डालते हैं जैसे कि वे एक ही निजी हों।

चूँकि उसका कच्चा दिमाग यह नहीं समझ सकता और इस प्रकार

सेना के कमांडर के आदेश पर काम करने और राज्य के कानूनों के अनुसार काम करने से इनकार करते हुए, वह कल्पना करता है कि सभी सैनिक एक दूसरे से रस्सियों से बंधे हुए हैं। वह सोचता है कि यह कितनी अद्भुत रस्सी होगी और वह आश्चर्यचकित हो जाता है।

बाद में, शुक्रवार को, वह एक शानदार मस्जिद में जाता है, उदाहरण के लिए अयासोफ़िया (हागिया सोफिया)। वह देखता है कि शुक्रवार की सामूहिक प्रार्थना करने वाले मुसलमानों की मंडली एक व्यक्ति की आवाज़ पर उठती है, झुकती है, सजदा करती है और बैठ जाती है। चूँकि वह शरिया को नहीं जानता है, जो पवित्र ईश्वरीय कानूनों और सिद्धांतों का संग्रह है जो मुसलमानों के जीवन और पूजा का मार्गदर्शन करता है, वह कल्पना करता है कि मंडली के सदस्य एक दूसरे से डोरियों से बंधे हैं जो उन्हें नियंत्रित करती हैं और उन्हें कठपुतलियों की तरह घुमाती हैं।

अपने मन में यह अत्यंत हास्यास्पद विचार लेकर वह मस्जिद से बाहर निकल जाता है।

इस तुलना की तरह, ईश्वर का प्रकृतिवादी इनकार करने वाला इस दुनिया में प्रवेश करता है, जो एक तरह से अनंत काल के प्रभु की अपनी असंख्य सेनाओं के लिए एक शानदार छावनी है, और दूसरी तरह से अपने सेवकों के लिए शाश्वत, सर्व-पूज्य की एक सुव्यवस्थित मस्जिद है। वह कल्पना करता है कि शाश्वत प्रभु की बुद्धि ने ब्रह्मांड के क्रम और संचालन के लिए जो नियम स्थापित किए हैं - वे नियम जिनका केवल नाममात्र का अस्तित्व है और वास्तव में उनके कार्यों के शीर्षक हैं

ब्रह्मांड के प्रशासन में - एक भौतिक अस्तित्व है और पूरे ब्रह्मांड को संचालित करने के लिए पर्याप्त ज्ञान और शक्ति है। इन्हें ईश्वरीय शक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराने के बजाय, वह ब्रह्मांड के अस्तित्व और संचालन को नाममात्र अस्तित्व के इन नियमों के लिए जिम्मेदार ठहराता है जिन्हें वह "प्रकृति" कहता है - और जिनके पास ब्रह्मांड के अस्तित्व और संचालन के लिए पर्याप्त ज्ञान और शक्ति है।

कोई शक्ति, ज्ञान, बुद्धि, चेतना और इच्छा नहीं है - और जिसे वह "प्राकृतिक शक्तियाँ" कहता है, जो वास्तव में ईश्वरीय शक्ति की अभिव्यक्ति हैं। वह इन शक्तियों को एक स्वतंत्र शक्ति के रूप में मानता है जो ब्रह्मांड को निर्देशित करने में सक्षम है। यह उपर्युक्त तुलना में मनुष्य की अज्ञानता से हज़ार गुना अधिक अपमानजनक अज्ञान है।

संक्षेप में, यदि वह चीज जिसे प्रकृतिवादी "प्रकृति" कहते हैं, उसकी कोई बाह्य वास्तविकता है, तो वह अधिक से अधिक एक कलाकृति हो सकती है, कोई कलाकार नहीं; वह एक डिजाइन हो सकती है, कोई डिजाइनर नहीं; वह आदेशों का एक समूह हो सकती है, आदेशों को जारी करने वाला नहीं; ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के नियमों का एक समूह हो सकती है, कोई कानून निर्माता नहीं; ईश्वर की गरिमा के समक्ष एक निर्मित पर्दा हो सकती है, कोई निर्माता नहीं; ईश्वर के कार्य करने के तरीके के अनुसार उत्पन्न कोई चीज, कोई सृजक नहीं; केवल एक कानून, कोई स्वतंत्र, सचेतन शक्ति या शक्तिशाली नहीं; और अंकित करने के लिए रेखाओं का एक समूह हो सकती है, कोई स्रोत, उत्पत्ति या लेखक नहीं।

निष्कर्ष के तौर पर, चूंकि वस्तुएं और प्राणी अस्तित्व में हैं और, जैसा कि इस ग्रंथ की प्रस्तावना में कहा गया है, उनके अस्तित्व को समझाने के लिए ऊपर वर्णित चार तरीकों के अलावा कोई अन्य तरीका नहीं हो सकता है, और चूंकि इनमें से पहले तीन तरीके, बताई गई असंभवताओं के कारण अमान्य सिद्ध हो चुके हैं, इसलिए आवश्यक रूप से और स्वयंसिद्ध रूप से, चौथा तरीका ही स्पष्ट रूप से एकमात्र वैध तरीका है।

यह दिव्य अस्तित्व और एकता का मार्ग है। यह शुरुआत में उद्धृत श्लोक से संकेत मिलता है ,

क्या ईश्वर, जो आकाशों और धरती का रचयिता है, के विषय में कोई संदेह हो सकता है? (14:10), जो स्पष्ट रूप से और निस्संदेह बताता है कि ईश्वर के अस्तित्व या अस्तित्व के विषय में कोई संदेह नहीं हो सकता।

ईश्वर की एकता, तथा सब कुछ सीधे उसके शक्तिशाली हाथ से निकलता है, तथा आकाश और पृथ्वी उसके सर्वोच्च नियंत्रण और निर्देशन की मुट्ठी में हैं।

हे प्रकृति और प्राकृतिक कारणों को रचनात्मकता का श्रेय देने वाले! हर चीज़ की प्रकृति, चीज़ों की तरह ही, बनाई गई है, क्योंकि यह कला से भरपूर, मौलिक और अपने आप में विशेष है। इसके अलावा, हर चीज़ की तरह, जो किसी कारण का परिणाम है, उसका स्पष्ट कारण भी बनाया गया है। इसके अलावा, हर चीज़ का अस्तित्व कई "उपकरणों" के अस्तित्व पर निर्भर करता है। ,

इसलिए, एक परम शक्तिशाली होना चाहिए जो दोनों चीजों और उनकी प्रकृति और कारणों, और आवश्यक उपकरणों का निर्माण करता है। और उस सर्वशक्तिमान को अपनी रचनात्मकता और अस्तित्व पर आधिपत्य में नपुंसक कारणों को साझा करने की क्या आवश्यकता है?

भगवान ऐसे विचार को मना करें! बल्कि, वह चीजों को उनके कारणों के साथ बनाता है ताकि वह अपने नामों और अपनी बुद्धि की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित कर सके। ऐसा करके, वह एक स्पष्ट, व्यवस्थित कारण-और-प्रभाव संबंध स्थापित करता है, और स्पष्ट कारणों को लोगों की नज़र में उसकी गरिमा और लोगों को चीज़ों और घटनाओं में दोषपूर्ण या दया के साथ असंगत के रूप में दिखाई देने वाली चीज़ों के बीच एक पर्दा बना देता है।

जो एक घड़ी के लिए अधिक आसान और उचित है-

निर्माता? एक घड़ी के दाँते बनाना और फिर उन्हें व्यवस्थित करना-

क्या उन्हें घड़ी बनाने के लिए इस्तेमाल करना सही है, या फिर कोगों के अंदर एक अद्भुत मशीन डालना और फिर घड़ी बनाने का काम मशीन के बेजान हाथों पर छोड़ देना सही है?

दूसरा विकल्प अधिक आसान और उचित है या अकल्पनीय और असंभव? अपने विवेक का उपयोग करके निर्णय लें!

या फिर एक लेखक किताब लिखने के लिए कलम, कागज़ और स्याही तैयार करता है। क्या यह उसके लिए ज़्यादा आसान और उचित है?

खुद किताब लिखना या कलम, कागज़ और स्याही के अंदर एक ऐसी मशीन का आविष्कार करना जो किताब से ज़्यादा कलात्मक और ज़्यादा परेशानी वाली हो और फिर उस बेहोश मशीन को किताब लिखने के लिए कहना, जबकि वह उसमें कोई दखल न दे? क्या दूसरा विकल्प नहीं है-

क्या यह पहले से सौ गुना अधिक कठिन है?

यदि आप कहें: यह सच है कि पुस्तक लिखने के लिए मशीन का आविष्कार करना, उसे लिखने से सौ गुना अधिक कठिन है, लेकिन इसमें आसानी भी है क्योंकि उस मशीन से एक ही पुस्तक की अनेक प्रतियां बनाई जा सकती हैं।

उत्तर: अपने नामों के असीम प्रकटीकरण और प्रभावों को अपनी असीम शक्ति के माध्यम से हमेशा नवीनीकृत करके उन्हें हमेशा अलग-अलग तरीकों से प्रदर्शित करने के लिए, शाश्वत डिजाइनर और लेखक ऐसी विशेष पहचान और विशेषताओं के साथ चीजों का निर्माण करता है कि शाश्वत रूप से सभी के लिए प्रार्थना करने वाले भगवान के कोई भी संदेश और भगवान की किताबें दूसरों के समान नहीं हैं। या-

विभिन्न अर्थ प्रदर्शित करने के लिए, प्रत्येक वस्तु की अपनी अलग पहचान और विशेष विशेषताएं होनी चाहिए।

यदि आपके पास आँखें हैं, तो मानव मुख को देखिए: आप देखेंगे कि यद्यपि आदम के समय से सभी मानव चेहरों की संरचना और अंग एक जैसे रहे हैं, फिर भी प्रत्येक में विशेष विशेषताएँ हैं जो उसे अन्य सभी से अलग करती हैं। इसलिए, प्रत्येक मानव चेहरा एक अलग, विशिष्ट पुस्तक है। प्रत्येक को उसकी विशेष विशेषताओं के साथ बनाने के लिए एक अलग लेखन सेट और एक अलग रचना की आवश्यकता होती है। प्रत्येक के लिए आवश्यक सामग्री एकत्र करने और प्रत्येक को उसके स्थान पर ठीक से स्थापित करने के लिए, एक पूरी तरह से अलग कार्यशाला होनी चाहिए। भले ही हम, जो असंभव है उसे संभव मानते हुए, प्रकृति को एक प्रिंटिंग प्रेस के रूप में सोचें, प्रत्येक लेखन के लिए अक्षरों की लौह कुंजियों की एक नई व्यवस्था बनाने के अलावा, प्रत्येक शरीर के अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी कणों को "प्रकृति" के सभी कोनों से सटीक मात्रा और विशिष्ट अनुपात में एकत्र किया जाना चाहिए और उसमें सही क्रम में व्यवस्थित किया जाना चाहिए; यह प्रत्येक लेखन के लिए अक्षरों की लौह कुंजियों को व्यवस्थित करने से सौ गुना अधिक कठिन है। इन सभी चीजों को करने के लिए, अभी भी परम शक्तिशाली के सर्वव्यापी ज्ञान, इच्छा और शक्ति की नितांत आवश्यकता है। इसलिए, मशीन की यह परिकल्पना पूरी तरह से निरर्थक कल्पना है।

घड़ी और पुस्तक की इन तुलनाओं की तरह, महिमा का निर्माता, सर्वशक्तिमान दोनों को बनाता है

कारण और उनके प्रभाव एक साथ हैं, और अपनी बुद्धि से प्रभावों के अस्तित्व को उनके कारणों पर निर्भर बनाता है। उसके पास ब्रह्मांड के निर्माण और संचालन के लिए नियमों का एक समूह है, जो वास्तव में उसके सृजन और निर्देशन के कार्यों के शीर्षक हैं। अपनी इच्छा से, उसने प्रत्येक चीज़ के लिए उन कार्यों या नियमों के दर्पण के रूप में एक प्रकृति नियुक्त की है, और अपनी शक्ति से वह प्रत्येक चीज़ को उसकी प्रकृति के अनुसार बनाता है। इसलिए, क्या इस सत्य को स्वीकार करना आसान है, जो पूरी तरह से उचित है और असंख्य अनुपातों का निष्कर्ष है-

अंतिम प्रमाण, हमारे पास स्वीकार करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है
यह मान लेना, या यह मान लेना कि जिसे आप प्रकृति और प्राकृतिक कारण कहते हैं, जो अंधे, अचेतन, समय और स्थान में समाहित, नश्वर और किसी भी ज्ञान या इच्छा से रहित हैं, उनमें प्रत्येक वस्तु के अस्तित्व के लिए आवश्यक असीमित उपकरण हैं, और वे एक संपूर्ण वस्तु के निर्माण और निर्देशन जैसे कार्य करने में सक्षम हैं।

ब्रह्मांड में अनंत ज्ञान, बुद्धि और विवेक की आवश्यकता है? क्या यह दूसरा विकल्प सभी संभावनाओं से परे, यहां तक कि अकल्पनीय नहीं है?

अविश्वासी प्रकृतिवादी जवाब देता है: भले ही मैं आपकी व्याख्याओं के प्रकाश में यह स्वीकार कर लूं कि आज तक मैंने जो विचार-पद्धति अपनाई है, वह तर्क से परे और अस्वीकार्य है, और मैं 'आवश्यक रूप से विद्यमान' को सभी चीज़ों का रचयिता मानता हूं, और कहता हूं कि 'विश्वास के लिए ईश्वर की स्तुति हो', फिर भी मुझे एक संदेह है। यद्यपि हम स्वीकार करते हैं कि ईश्वर ही रचयिता है, फिर भी इससे क्या नुकसान हो सकता है?

क्या कुछ महत्वहीन कारणों से परमेश्वर की प्रभुता की संप्रभुता के संबंध में कुछ चीजों के निर्माण में एक निश्चित भूमिका निभाना संभव है? क्या इसका अर्थ उसकी संप्रभुता की ओर से कोई दोष है?

जवाब: **जैसा कि** रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में स्पष्ट रूप से बताया गया है , संप्रभुता अपने स्वभाव से ही हस्तक्षेप को अस्वीकार करती है। यहां तक कि एक महत्वहीन निदेशक या अधिकारी भी अपने बच्चे के हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं करता है

अपने अधिकार के साथ। इतिहास में कुछ धार्मिक शासकों ने अपने मासूम बेटों को इस डर से मार डाला कि कहीं उनके बेटे उनके शासन में हस्तक्षेप करने की कोशिश न करें, यह दर्शाता है कि शासन में "हस्तक्षेप की अस्वीकृति का कानून" कितना मौलिक है। "दूसरों की भागीदारी को रोकने का कानून", जो संप्रभुता की स्वतंत्रता की मांग करता है, एक ही समय में एक ही स्थान पर दो संप्रभुओं के अस्तित्व को अस्वीकार करता है, चाहे वह देश हो या शहर। इसने मानव इतिहास में उथल-पुथल के माध्यम से अपनी महान शक्ति दिखाई है।

इस प्रकार, यदि मानवता में सापेक्ष और क्षणिक शासन और संप्रभुता की भावना, जो शक्तिहीन है और जिसे सहायता की आवश्यकता है, दूसरों के हस्तक्षेप और भागीदारी को अस्वीकार करती है, और अपनी स्थिति में अपनी स्वतंत्रता को इतनी ईर्ष्या से बनाए रखना चाहती है, तो, यदि आप तुलना कर सकते हैं, तो हस्तक्षेप की अस्वीकृति और भागीदारी की रोकथाम सर्वशक्तिमान के लिए कितनी अपरिहार्य है, जिसकी पूर्ण संप्रभुता सृष्टि पर उसके पूर्ण प्रभुत्व पर आधारित है या उससे उत्पन्न होती है, जिसका पूर्ण शासन दूसरों के हस्तक्षेप और भागीदारी को अस्वीकार करने और दूसरों के हस्तक्षेप और भागीदारी को अस्वीकार करने और दूसरों के हस्तक्षेप और भागीदारी को रोकने के लिए कितना अपरिहार्य है, जिसकी पूर्ण संप्रभुता सृष्टि पर उसके पूर्ण प्रभुत्व पर आधारित है या उससे उत्पन्न होती है, जिसका पूर्ण शासन दूसरों के हस्तक्षेप और भागीदारी को अस्वीकार करने और ...

उनकी दिव्यता से उत्पन्न होती है, जिनकी पूर्ण स्वतंत्रता उनकी पूर्ण एकता और अद्वितीयता से उत्पन्न होती है, और जिनकी पूर्ण आत्मनिर्भरता उनकी पूर्ण शक्ति से उत्पन्न होती है।

जहाँ तक आपके संदेह के दूसरे भाग का प्रश्न है, जो यह है कि यदि कुछ महत्वहीन वस्तुओं के निर्माण और नियंत्रण में कुछ अंशों का श्रेय कुछ महत्वहीन कारणों को दिया जाता है, और वे वस्तुएँ अपनी पूजा का कुछ अंश उन कारणों को देती हैं, तो इससे कणों से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी प्राणियों की पूजा में क्या हानि होती है, जो कि अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता को समर्पित है, जो पूजा का परम विषय है?

उत्तर: ब्रह्माण्ड का सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता

उसने ब्रह्माण्ड को एक वृक्ष की तरह बनाया है, जिसका सबसे उत्तम फल चेतन प्राणी है, तथा चेतन प्राणियों में मानवता सबसे व्यापक फल है। क्या उस परम प्रभुता सम्पन्न और सर्व-स्वतंत्र शासक, उस अद्वितीय एकमात्र, जिसने ब्रह्माण्ड को इसलिए बनाया है ताकि उसे जाना और प्यार किया जा सके, को दूसरों को मानवता, जो कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का फल है, का स्वामित्व लेने देना चाहिए?

क्या वह मानवता के आभार और आराधना को, जिसके लिए उसे बनाया गया है, और जो उसका सबसे श्रेष्ठ फल है, दूसरों को समर्पित करने की अनुमति देगा? क्या वह, अपनी बुद्धि के बिल्कुल विपरीत, सृष्टि के परिणाम और ब्रह्मांड के फल को व्यर्थ और व्यर्थ बना देगा?

भगवान ऐसा विचार न आने दे!

इसके अलावा, क्या वह दूसरों को समर्पित प्राणियों की पूजा की अनुमति देगा, जिसका अर्थ होगा उसकी बुद्धि और प्रभुता का खंडन? जबकि वह अपने कार्यों के माध्यम से प्रदर्शित करता है कि वह चाहता है कि उसे असीम सीमा तक जाना और प्यार किया जाए, क्या वह खुद को भुला देगा और ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए अपने सबसे ऊंचे उद्देश्यों को नकार देगा, सभी प्राणियों की कृतज्ञता, प्रेम और पूजा को उसके अलावा किसी और के प्रति निर्देशित करने की अनुमति देकर?

हे मित्र, तूने प्रकृतिवाद त्याग दिया है! अब बोलने की बारी तेरी है! वह उत्तर देता है:

> भगवान की जय हो, मेरी ये दोनों शंकाएँ दूर हो गई हैं। आपने बहुत ही स्पष्ट रूप से समझाया है कि ईश्वर एक है और क्यों वह ही पूजा का सच्चा पात्र है, तथा उसके अलावा कोई भी अन्य पूजा का अधिकारी नहीं है और पूजा के योग्य नहीं है। इसलिए, इस सत्य को नकारना सूर्य और दिन को नकारने की हद तक अहंकार होगा।

निष्कर्ष

जिस व्यक्ति ने प्रकृतिवाद को त्यागकर ईश्वर में विश्वास स्वीकार किया है, उसने कहा, "ईश्वर की स्तुति हो; ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व के विषय में अब मुझे कोई संदेह नहीं है, परन्तु फिर भी मेरे पास कुछ प्रश्न हैं।"

पहला सवाल

हम बहुत से लोगों को सुनते हैं जो रोज़ाना नमाज़ अदा करने में आलस्य करते हैं और पूछते हैं: सर्वशक्तिमान ईश्वर को हमारी इबादत की क्या ज़रूरत है? कुरान में वह उन लोगों को कड़ी फटकार क्यों लगाता है जो इबादत नहीं करते और उन्हें नरक जैसी भयानक सज़ा की धमकी क्यों देता है? कुरान की उदार, सौम्य और संतुलित शैली को एक मामूली गलती के सामने इतनी गंभीरता दिखाना कैसे शोभा देता है?

जवाब: सच में, सर्वशक्तिमान ईश्वर को आपकी पूजा की बिल्कुल भी ज़रूरत नहीं है, न ही किसी और चीज़ की। लेकिन आपको पूजा करने की ज़रूरत है, क्योंकि सच में आप आध्यात्मिक रूप से बीमार हैं।

हमने रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में संकेत दिया है

कि उपासना मानवता के अनेक आध्यात्मिक घावों का उपचार है। यदि कोई रोगी किसी दयालु डॉक्टर से, जो इस बात पर जोर देता है कि उसे उसकी बीमारी के लिए निर्धारित दवाएँ लेनी चाहिए, यह कहते हुए प्रतिक्रिया करता है, “आपको दवा की क्या आवश्यकता है? आप इस तरह से क्यों आग्रह कर रहे हैं?”, तो आप समझ सकते हैं कि यह कितना मूर्खतापूर्ण होगा।

जहाँ तक इबादत के फर्ज को पूरा न करने के खिलाफ़ कुरान की कड़ी धमकियों का सवाल है, तो वह इस तरह है: अपनी प्रजा के अधिकारों की रक्षा के लिए, एक राजा एक साधारण व्यक्ति को उस हद तक सज़ा देता है, जिस हद तक वह उन अधिकारों का उल्लंघन करता है। इसी तरह, जो व्यक्ति इबादत नहीं करता, खास तौर पर नमाज़, वह उन प्राणियों के अधिकारों का गंभीर उल्लंघन करता है जो अनंत काल के पूर्ण प्रभु की प्रजा के समान हैं।

क्योंकि प्राणियों की पूर्णता स्वयं को उसके द्वारा प्रदर्शित करती है

महिमामंडन और अन्य प्रकार की पूजा निर्माता के साथ उनके रिश्ते द्वारा प्रकट होती है। जो व्यक्ति पूजा नहीं करता है, वह वास्तव में अपनी पूजा को नहीं देख सकता है, और यहां तक कि उसे अस्वीकार भी करता है। जीवों को उनकी स्थिति से कम करके, जो कि प्रत्येक प्राणी शाश्वत रूप से सभी के लिए प्रार्थना किए जाने वाले संदेश और उनकी पूजा के कारण उनके नामों का दर्पण है, महत्वहीन, निर्जीव, अर्थहीन, लक्ष्यहीन और बेतरतीब ढंग से अस्तित्व में रहने वाली चीजों की हद तक, इस व्यक्ति ने उनका अपमान किया है, और उनकी पूर्णता को अस्वीकार किया है।

दरअसल, हर कोई ब्रह्मांड को अपने आईने में देखता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मानवता को ब्रह्मांड के लिए एक माप और पैमाने के रूप में बनाया है। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को ब्रह्मांड से बाहर एक विशेष, निजी दुनिया दी है। प्रत्येक व्यक्ति की विशेष दुनिया उसके दिल के रंग को लेती है। उदाहरण के लिए, एक हताश, रोता हुआ व्यक्ति प्राणियों को रोते और निराश देखता है, जबकि एक खुशमिजाज, आशावादी व्यक्ति उन्हें भी खुश और मुस्कुराते हुए देखता है। जो व्यक्ति गंभीर, चिंतनशील तरीके से सर्वशक्तिमान ईश्वर की पूजा करता है, वह कुछ हद तक प्राणियों की वास्तविक पूजा और महिमा को समझ सकता है, जबकि जो व्यक्ति पूजा नहीं करता है, वह या तो असावधानी या इनकार के कारण, प्राणियों के बारे में किसी भी सत्य से रहित और उनकी वास्तविक पूर्णता के बिल्कुल विपरीत तरीके से सोचता है, और इस तरह उनके अधिकारों का उल्लंघन करता है।

इसके अलावा, कोई भी अपना खुद का निर्माता और मालिक नहीं है; हर कोई सर्वशक्तिमान ईश्वर का सेवक है। इसलिए,

जो लोग निर्धारित प्रार्थनाएँ नहीं करते, वे अपनी शारीरिक, दुष्ट आत्मा से पराजित होकर, स्वयं को नुकसान पहुँचाते हैं, हालाँकि वे अपने स्वामी और मालिक के सेवक हैं। इसलिए, उनके स्वामी दुष्ट आत्मा के विरुद्ध अपने सेवक के अधिकारों की रक्षा करने और उन्हें बहाल करने के लिए गंभीर धमकियाँ देते हैं। इसके अलावा, जो व्यक्ति उपासना नहीं करता, जो कि ईश्वर की सृष्टि का उद्देश्य है या किसी व्यक्ति के अस्तित्व का अंतिम कारण है, वह ईश्वरीय इच्छा और बुद्धि का उल्लंघन करता है, और इसलिए दंड का पात्र है।

संक्षेप में, जो लोग आराधना नहीं करते, वे न केवल स्वयं को, बल्कि सर्वशक्तिमान ईश्वर के सेवकों को भी गलत ठहराते हैं, बल्कि उन प्राणियों के अधिकारों का भी उल्लंघन करते हैं जो ईश्वर के सेवकों के रूप में उनकी पूर्णताओं से उत्पन्न होते हैं। जिस प्रकार अविश्वास प्राणियों का अपमान है, उसी प्रकार आराधना के कर्तव्य को पूरा न करना भी प्राणियों द्वारा साझा की गई पूर्णताओं का खंडन है।

इसी तरह, यह ईश्वरीय बुद्धि के विरुद्ध अपराध है और इसके लिए कठोर धमकियाँ और सज़ा मिलनी चाहिए। इस सत्य को व्यक्त करने के लिए ही चमत्कारी अभिव्यक्ति के कुरान ने चर्चा के अंतर्गत कठोर शैली को चुना है, जो वाक्पटुता के साथ पूर्ण रूप से अनुरूप है, और स्थिति की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

दूसरा प्रश्न

वह व्यक्ति जिसने प्रकृतिवाद को त्याग दिया है और विश्वास करने लगा है, वह अगला प्रश्न पूछता है: यह आश्चर्यजनक है कि

जो कुछ भी उसके पास है और जो कुछ भी वह करता है, और हर पहलू में, सब कुछ पूरी तरह से ईश्वरीय इच्छा और शक्ति पर निर्भर करता है। अनंत प्रचुरता जिसे हम अस्तित्व में स्पष्ट रूप से देखते हैं, और उन चीजों के निर्माण में असीम सहजता जो एक ईश्वर द्वारा उनके निर्माण से उत्पन्न होती हैं, और जिसे कुरान की ऐसी आयतों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है जैसे

> तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है (31:28), और प्रलय का विषय तो पलक झपकने के समान है, या उससे भी अधिक शीघ्र है (16:77),

यह दर्शाइए कि यह सर्वोच्च, आश्चर्यजनक तथ्य पूरी तरह से स्वीकार्य और तर्कसंगत है। हालाँकि, हम इस सर्वोच्च, आश्चर्यजनक तथ्य को समझ नहीं सकते। आप इस सहजता की व्याख्या कैसे करते हैं?”

उत्तर: यह स्पष्ट रूप से और एक ठोस तरीके से समझाया गया था, जबकि इस पर टिप्पणी करते हुए कि, वह सभी चीजों पर शक्तिशाली है, जो बीसवें पत्र का दसवां वाक्य है। विशेष रूप से, उस पत्र के परिशिष्ट में इसे और भी स्पष्ट रूप से समझाया गया था कि जब सभी चीजों को एक, एकल निर्माता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उनका अस्तित्व एक ही चीज के अस्तित्व जितना आसान हो जाता है। यदि उन्हें अद्वितीयता वाले एक ही व्यक्ति के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाता है, तो एक भी चीज का अस्तित्व सभी चीजों के अस्तित्व जितना कठिन हो जाता है; वास्तव में, एक बीज का अस्तित्व एक पेड़ के अस्तित्व जितना कठिन हो जाता है। लेकिन अगर सभी चीजों को उनके अपने निर्माता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है

सच्चे रचयिता के होते ही ब्रह्माण्ड का अस्तित्व वृक्ष के अस्तित्व जितना सरल हो जाता है, वृक्ष का अस्तित्व बीज के अस्तित्व जितना सरल हो जाता है, स्वर्ग का अस्तित्व वसंत के अस्तित्व जितना सरल हो जाता है, तथा वसंत का अस्तित्व फूल के अस्तित्व जितना सरल हो जाता है। रिसाले-ए-नूर के कुछ भागों में हमने अस्तित्व में असीम प्रचुरता के बावजूद वस्तुओं के असीमित मूल्य के पीछे कई कारणों और बुद्धिमत्ता के कई उदाहरणों का उल्लेख किया है, तथा अस्तित्व में आने वाली वस्तुओं में असीम सुविधा और गति के बावजूद हर चीज में परिपूर्ण कलात्मकता का उल्लेख किया है। हम उनमें से केवल कुछ का ही संक्षेप में उल्लेख करेंगे:

उदाहरण के लिए, यदि सौ निजी सैनिकों की कमान एक अधिकारी को दी जाती है, तो उनकी कमान सौ अधिकारियों द्वारा एक निजी सैनिक की कमान संभालने से सौ गुना आसान होगी। इसी तरह, एक केंद्र या कारखाने या सरकार द्वारा सेना को सुसज्जित करना एक सैनिक को सुसज्जित करने जितना ही आसान है, जबकि कई अलग-अलग कमान केंद्रों या कारखानों द्वारा एक सैनिक को सुसज्जित करना उतना ही मुश्किल है जितना कि एक सैनिक को सुसज्जित करना।

एक पूरी सेना। क्योंकि एक सेना के लिए जितने उपकरण हैं, उतनी ही फैक्ट्रियाँ भी होनी चाहिए।

यह देखा गया है कि एक ही बीज से और एक ही जड़ पर उगने तथा एक ही नियम से बढ़ने और पोषण पाने के कारण, हज़ारों फल देने वाले पेड़ की वृद्धि एक ही फल की वृद्धि जितनी आसान है। लेकिन अगर एक पेड़ अपनी वृद्धि के लिए कई स्रोतों पर निर्भर हो, तो उसके लिए ज़रूरी सभी ज़रूरतें पूरी हो जाएँगी।

अगर हर फल अलग-अलग जगहों से लाया जाए, तो हर फल का उत्पादन उतना ही मुश्किल हो जाएगा जितना कि एक पेड़ का। एक भी बीज पैदा करना, जो पेड़ का नमूना और सूचकांक है, पेड़ के उत्पादन जितना ही मुश्किल होगा। क्योंकि पेड़ की वृद्धि और जीवन के लिए सभी पदार्थ बीज के लिए भी आवश्यक हैं।

इस प्रकार, ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जो दर्शाते हैं कि एक ही स्रोत पर निर्भर हज़ारों चीज़ों का अस्तित्व में आना, कई स्रोतों पर निर्भर एक ही चीज़ के अस्तित्व में आने से कहीं ज़्यादा आसान है। इस तथ्य की विस्तृत व्याख्या के लिए आपको रिसाले -ए-नूर के कुछ अन्य भागों का संदर्भ देते हुए , हम यहाँ केवल इसके एक महत्वपूर्ण पहलू की व्याख्या करेंगे जो ईश्वरीय ज्ञान, शक्ति और नियति से संबंधित है। यह इस प्रकार है:

आप एक अस्तित्ववान प्राणी हैं। यदि आप खुद को शाश्वत, सर्वशक्तिमान मानते हैं, तो आप समझ जाएँगे कि कैसे उसने आपको एक ही आदेश से शून्य से बनाया है, जैसे माचिस जलाना। हालाँकि, यदि आप खुद को उसके लिए नहीं मानते हैं, बल्कि भौतिक कारणों और प्रकृति के लिए मानते हैं, तो चूँकि आप एक सुव्यवस्थित सारांश, एक फल और ब्रह्मांड का एक लघु सूचकांक हैं, इसलिए आपको बनाने के लिए, आपके शरीर के निर्माण के लिए आवश्यक सभी पदार्थों को ब्रह्मांड से बारीकी से छानना होगा और इसके सभी कोनों से सटीक माप में एकत्र करना होगा। क्योंकि भौतिक पदार्थ केवल हैं

निर्माण या संयोजन के लिए उपयोग किया जाता है, और भौतिक कारण केवल उनके संग्रह के साधन के रूप में काम कर सकते हैं। हर समझदार व्यक्ति जानता है और मानता है कि वे कुछ भी नहीं से वह नहीं बना सकते जो उनके पास खुद नहीं है।
इसलिए, उन्हें ब्रह्माण्ड के सभी कोनों से एक सूक्ष्म जीव के शरीर के लिए आवश्यक सभी पदार्थों के कण एकत्रित करने होंगे।

अब समझिए कि ईश्वरीय एकता में कितनी सहजता है।

और अल्लाह के साथ साझी ठहराने में कितनी कठिनाई है!

दूसरा, जब सब कुछ एक ही रचयिता को माना जाता है, तो ईश्वरीय ज्ञान के दृष्टिकोण से भी अस्तित्व असीम रूप से आसान हो जाता है। यह इस प्रकार है:

एक मामले में भाग्य ज्ञान के समान है।

यह प्रत्येक वस्तु के लिए एक निश्चित मापदंड नियुक्त करता है, जिसे उसका विशिष्ट, अमूर्त साँचा माना जा सकता है। नियति द्वारा नियुक्त वह मापदंड या साँचा उसके अस्तित्व के लिए एक मॉडल के रूप में कार्य करता है। जब दिव्य शक्ति सृजन करती है, तो वह उस नियुक्त माप के अनुसार अत्यंत सहजता से ऐसा करती है। अब, यदि उस सत्ता को असीमित, सर्वव्यापी, शाश्वत ज्ञान वाले सर्वशक्तिमान महामहिम के अधीन न किया जाए, तो न केवल हजारों कठिनाइयाँ सामने आती हैं, बल्कि उसका अस्तित्व सौ गुना अधिक अकल्पनीय हो जाता है। क्योंकि यदि यह दिव्य नियति या ज्ञान द्वारा नियुक्त मापदंड न होता, तो हजारों भौतिक वस्तुएँ

भौतिक संसार में बनाये गये सांचों को एक सूक्ष्म जीव के शरीर में उपयोग करना होगा।

तो, समझिए कि हर चीज़ को एक ही स्रोत से जोड़ने में असीम आसानी क्यों है, और क्यों कई स्रोतों को स्वीकार करने या ईश्वर के साथ भागीदार बनाने में अंतहीन कठिनाइयाँ हैं। साथ ही, यह भी समझिए कि आयत में कितना वस्तुनिष्ठ, निर्विवाद, स्पष्ट और उच्च सत्य कहा गया है, क़यामत का मामला (ईश्वरीय शक्ति के संबंध में) पलक झपकने के बराबर है, या उससे भी जल्दी (16: 77)।

तीसरा प्रश्न

जिस मित्र को सही मार्गदर्शन मिला है, वह पूछता है: दार्शनिकों में सबसे प्रसिद्ध लोग दावा करते हैं कि कुछ भी शून्य से नहीं बनाया जा सकता है, और कुछ भी पूरी तरह से विलुप्त नहीं होता है। ब्रह्मांड का कारखाना संयोजन और विघटन के चक्र पर चलता है।

क्या ऐसा है?

उत्तर: दार्शनिकों में सबसे प्रसिद्ध वे लोग जो सृष्टि को कुरान की रोशनी में नहीं देखते, वे प्रकृति और भौतिक कारणों से जीवों के निर्माण और अस्तित्व को अकल्पनीय रूप से कठिन मानते हैं और वे दो समूहों में विभाजित हैं। एक समूह सोफिस्ट है। तर्क को त्यागकर, जो मानवता के लिए अनन्य है, वे ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारना आसान पाते हैं, जिसमें उनका अपना ब्रह्मांड भी शामिल है, बजाय गुमराह करने के उस रास्ते पर चलने के जो रचनात्मकता को रचनात्मकता के लिए जिम्मेदार ठहराता है।

प्रकृति और भौतिक कारणों के बारे में कुछ भी नहीं जानते। इसलिए, अपने और ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारते हुए, वे पूर्ण अज्ञानता में उतर जाते हैं।

दूसरा समूह इस तथ्य से अवगत है कि प्रकृति और भौतिक कारणों को रचनात्मकता का श्रेय देना, मक्खी या बीज जैसे छोटे से प्राणी के अस्तित्व के लिए भी अंतहीन मुश्किलें पैदा करता है, और इसलिए यह तर्कहीन है। यह उन्हें सृजन के कार्य को नकारने के लिए प्रेरित करता है, और दावा करता है कि कुछ भी नहीं से कुछ भी अस्तित्व में नहीं आ सकता है, और विनाश असंभव है। वे कल्पना करते हैं कि सब कुछ संयोजन, विघटन और पुनः संयोजन के चक्र में निहित है, जो परमाणुओं की यादृच्छिक गति और संयोग की हवाओं पर निर्भर है।

अब, उन लोगों की अज्ञानता देखिए जो अपने को सबसे अधिक बुद्धिमान समझते हैं, और समझिए कि गुमराही लोगों को बौद्धिक दरिद्रता के किस बिंदु तक ले जा सकती है!

उस शाश्वत शक्ति पर विचार करें जिसने छह दिनों में ब्रह्मांड का निर्माण किया, और लाखों प्राणियों की एक साथ रचना और पुनः रचना में स्वयं को प्रदर्शित किया।

हर साल धरती पर एक नई प्रजाति को जन्म देती है और हर बसंत में छह सप्ताह में दुनिया को एक नई प्रजाति से बदल देती है जो पहले से कहीं ज़्यादा कला और ज्ञान से भरी होती है! अदृश्य लेखन को दृश्यमान बनाने के लिए उस पर रसायन लगाने की तरह, यह शक्ति दिव्य ज्ञान में दिव्य नियति द्वारा पहले से निर्धारित और पहचाने गए चीजों और प्राणियों के मूलरूपों को बाहरी अस्तित्व देती है। इसलिए, यह अधिक मूर्खतापूर्ण होगा-

इस शक्ति को सृजन की क्षमता से वंचित करना तथा सृजन के कार्य को अस्वीकार करना सोफिस्टों से अधिक अज्ञानी और मूर्ख है।

चूँकि ये दोनों दुर्भाग्यपूर्ण समूह, जो स्वयं में पूर्णतया शक्तिहीन हैं और जिनके पास आंशिक इच्छाशक्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, तथापि फिरौन से भी अधिक अभिमानी और दुर्दांत हैं, और प्रकृति तथा भौतिक कारण, जिन पर वे भरोसा करते हैं, शून्य से कुछ बनाने और उसे पूरी तरह से नष्ट करने में असमर्थ हैं, वे दावा करते हैं कि शून्य से कुछ भी अस्तित्व में नहीं है, और जो अस्तित्व में है वह अस्तित्वहीन नहीं हो सकता, इस प्रकार वे सर्वशक्तिमान की रचना और अस्तित्वहीनता को नकारते हैं।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पास दो तरह की रचनाएँ हैं। एक है उत्पत्ति और आविष्कार। यानी, वह किसी भी चीज़ को शून्य से अस्तित्व में लाता है, जिसमें वह सब कुछ शामिल है जो उसके लिए ज़रूरी है। दूसरा है बनाना और रचना करना। यानी, अपनी बुद्धि की पूर्णता और उसके कई सूक्ष्म उदाहरणों को प्रदर्शित करने के लिए, जैसे कि अपने कई नामों की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित करना, वह ब्रह्मांड के तत्वों से कुछ चीज़ें बनाता है। सर्व-प्रदाता होने के नाते, वह अपने आदेश के अधीन परमाणुओं और पदार्थों को भी उनके पास भेजता है, और उन्हें अपने भीतर संचालित करता है।

इस प्रकार, अस्तित्वहीनता से अस्तित्व में लाना और अस्तित्वहीनता में भेजना, परम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दो निरंतर, अनंत सरल क्रियाएं हैं।

वह, जो आविष्कार करता है या उत्पत्ति करता है और बनाता है या

जो यह दावा करता है कि एक शक्ति जो प्रत्येक वसंत में शून्य से लाखों जीवित प्रजातियों के रूपों और गुणों को उनकी सभी स्थितियों और अवस्थाओं के साथ बनाती है, वह अस्तित्व को अस्तित्व नहीं दे सकती जो अस्तित्व में नहीं है, वह अस्तित्वहीन है।

जो व्यक्ति प्रकृतिवाद को त्यागकर सत्य को स्वीकार करता है, वह निष्कर्ष निकालता है: सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद, मैंने अस्तित्व के कण-कण पर पूर्ण विश्वास प्राप्त कर लिया है, और निराधार अनुमानों और गुमराही से बच गया हूँ। और मेरा एक भी संदेह शेष नहीं रह गया है।

इस्लाम धर्म और विश्वास में पूर्णता के लिए ईश्वर की प्रशंसा हो!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

अनुक्रमणिका

ए

बहुतायत; अस्तित्व में, 31-32

एडम (पैगंबर), 23

कलात्मकता; उत्तम, ३२

रचनात्मकता को जिम्मेदार ठहराना; "प्रकृति" और
"प्राकृतिक" कारण, 21; भौतिक कारण, 35;
प्रकृति या कारण या स्वयं चीजों के लिए, 13; ए

एकल सृष्टिकर्ता, 34; सब कुछ एक ही स्रोत को
जिम्मेदार ठहराने में असीम सहजता, 35

हागिया सोफिया (हागिया सोफिया), 19

सी

कारण, vii, 6, 17, 21, 26, 27; स्पष्ट, 21; भौतिक, 2, 3; अंध
भौतिक, 2; रचनात्मकता को जिम्मेदार ठहराना, 21,
35-36

कारण-और-परिणाम संबंध, 21

सभ्यता, vii

तुलना, 17, 19-20

चेतना, 2, 5, 8, 10, 12, 20

सृष्टि, आठवीं; कारणों और उनके प्रभावों की असीम सहजता, 31;

एक साथ, २३; प्रकार, ३७; ब्रह्मांड का ताकि भगवान
हो सके

ज्ञात और प्रिय, 26

रचना और अपघटन; चक्र, 35

डी

इनकार, 27, 29-30

भाग्य, viii, 4, 8, 15, 17, 33-34, 36;
का काम, 15

दिव्य नाम (सुंदर नाम)
और ईश्वर के गुण); सभी-
महिमावान, 38; स्वतंत्र, 26; महाप्रतापी, 25;
पूर्ण प्रभुता संपन्न, 26, 28; ईश्वरीय

ज्ञान, 33-34, 36; शाश्वत
डिज़ाइनर, 18, 22; सभी के लिए हमेशा चाहा जाने
वाला, 13-14, 22, 29;
मेकर ऑफ मैजेस्टी, 18, 23; ऑल-
38 हे सर्वशक्तिमान,
25; सर्वशक्तिमान, 5, 12, 23, 34;
सर्व-प्रावधान, 37; सर्वज्ञ, 38;
विश्व के सर्वज्ञ निर्माता

पद्य, 26; शाश्वत डिजाइनर और
लेखक, 22; आकाश और पृथ्वी का सृजनकर्ता, 1,
21;
अनन्त सूर्य की शक्ति, 11

कर्तव्य, 28, 30; पूर्ति, 14

और

पृथ्वी, 1, 13, 21, 36

तत्व, 4-8, 12, 37

यूरोप, 12-13

अस्तित्व, १-६, १३-१४, १६-२१, २३-२५,
27, 30-38; किसी व्यक्ति के लिए अंतिम कारण, 30

अस्तित्व; ईश्वर का, १

एफ

स्वतंत्र इच्छा, viii

शुक्रवार, सामूहिक प्रार्थना, 19

जी

सरकार, 32

एच

असावधानी, 29

मानव चेहरा, 23

मानवता; ब्रह्माण्ड के लिए एक माप और पैमाने के रूप में, 29;
ब्रह्माण्ड के सूचकांक के रूप में, 33

एल

कानून; दूसरों की भागीदारी को रोकने का, 25; हस्तक्षेप की
अस्वीकृति का, 25

ब्रह्माण्ड के निर्माण और संचालन के लिए 24 नियम

जीवन, आठ, 6, 10, 33; उत्पत्ति, 10

एम

अभिव्यक्तियों; के नाम
अनन्त सूर्य, 12

भौतिकवाद, vii

चिकित्सा, 3-4, 28

गुमराह करना, 34-38

एन

प्रकृतिवाद, 18, 27, 30, 38; दलदल, 18

प्रकृतिवादी नास्तिकता, १; प्रकृतिवादी
परमेश्वर का इन्कार करनेवाला, 19

प्रकृतिवादी दार्शनिक, १

प्रकृतिवादी, 1, 13, 20

प्राकृतिक शक्तियाँ, 2, 11

प्रकृति, vii का काम, 9; एक बोर्ड के रूप में
दैवी नियति या आकस्मिकता के क्षेत्र में निर्धारण, 17;
अस्तित्व का श्रेय,13; अचेतन, 11, 12

निम्रोद, 15

अस्तित्वहीनता, 37-38

महासागर, 11, 13

एकता; परमेश्वर की, 1-3

पी

कलम; ईश्वरीय भाग्य की, 8; ईश्वरीय शक्ति की, 8; कलम;
निरोध की-
खनन, 11; शाश्वत सर्व-
शक्तिशाली एक, 9

पूर्णता; प्राणियों की, २८

स्थायित्व, 8

फिरौन, 15, 37; महल, 15

फार्मेसी, 3, 4

दार्शनिक, 1, 35

दर्शन, vii-viii

संभावनाएँ; असीमित, 6, 24

(दिव्य) शक्ति; कार्य, 15

आर

पुनरुत्थान, आठ, 31

नूर देखें, iii, v, vii-viii, 2, 14, 16,
25, 28, 32-33

एस

तराजू; दिव्य भाग्य और डी-
विश्वास करो, 4

विज्ञान, vii-viii

शिर्क, 34-35

आत्मा; दुष्ट-आदेश देनेवाला, 30

कुतर्क; लोग, 5

में

अविश्वास, vii; सृजनात्मकता के अपमान के रूप में
चित्र, 30

(दिव्य) एकता, 34

में

बुद्धि, चमत्कार, 17

उपासना, viii; आध्यात्मिक घावों के उपचार के रूप में, 28;
प्राणियों के लिए, 29